बार्दो लोक-नाटक में दार्शनिकता के अभिव्यंजक तत्त्व और लोक-दृष्टि

मिसुङः मदो

अरुणाचल प्रदेश नैसर्गिक सौंदर्य के साथ ही साथ बहुरंगी संस्कृतियों से भी परिपूर्ण है। विभिन्नता में एकता यहाँ की अनूठी विशिष्टता है। विभिन्न भाषा एवं बोलियाँ, रीति-रिवाज, वेश-भूषा और भिन्न प्रकार के पर्व एवं त्योहार इत्यादि यहाँ की पहचान का हिस्सा है। अरुणाचल प्रदेश के प्रमुख त्योहार हैं- सोलुंग, मोपिन, लोसर, द्री, सी-दोन्यी, बुरी-बूत, पोदी बार्बी, मोल, सांगकेन, खान, रेह, आरान, तोरज्ञा और तम्लादु आदि। इन्हीं सब विशेषताओं में बार्दो लोक-नाटक भी एक सांस्कृतिक कला का रूप है, जो अरुणाचल प्रदेश के खाम्बा जनजाति का एक महत्त्वपूर्ण लोकनाटक है। खाम्बा या खाम्पा जनजाति अरुणाचल प्रदेश के प्रमुख जनजातियों में से एक है। यह जनजाति बौद्ध धर्म के महायान शाखा की अनुयायी है। खाम्बा जनजाति की आबादी बहुत कम है। वर्ष 1991 जनगणना के अनुसार इनकी कुल जनसंख्या 1,333 मात्र थी। खाम्बा जनजाति मूल रूप से अपर सियांग जिला के उत्तरी क्षेत्र के टूटिंग, ताशीगाँव, मंकोता, योर्तो, न्येरेंग आदि स्थानों में निवास करते हैं। इनके रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा और मान्यता, पर्व त्योहार और लोकविश्वास इत्यादि मेम्बा जनजाति से काफी मिलते-जुलते हैं। इस जनजाति में एक प्रख्यात लोक नाटक खेला जाता है, जिससे 'बार्दो' कहा जाता है। बार्दो लोकनाटक का मंचन 'दूबा' त्योहार के अवसर पर किया जाता है। दूबा त्योहार सात दिनों तक चलता है। पहले पांच दिनों तक धार्मिक अनुष्ठान और पूजा-पाठ किये जाते हैं और अंतिम दो दिनों में बार्दो नाटक का मंचन होता है। इस लोकनाट्य का मंचन बौद्ध मठ के आँगन में होता है और इसे खुले मंच पर खेला जाता है। इस नाटक में अधिक तामझाम की कोई गुंजाइश नहीं होती है। यह एक धार्मिक लोकनाटक है जिसका मूल कथ्य कर्मफल, पुनर्जन्म, नैतिक आस्थाओं इत्यादि पर केंद्रित होता है। यह नाटक पात्र-बहुल होता है जिसमें पांच मुख्य पात्र और बीस से अधिक गौण पात्र होते हैं।

खाम्बा जनजाति के अतिरिक्त अन्य बौद्ध समुदायों में भी बार्दो लोकनाटक का मंचन होता है जैसे मेम्बा जनजाति और भूटान देश के बौद्ध समुदायों में। बौद्ध धर्म के महायान संप्रदाय में बार्दो परंपरा प्रचलित है। बार्दो धार्मिक लोक नाटक है और इस लोक नाटक में दार्शनिक तत्त्वों की प्रचुरता है। दरअसल, 'बार्दो' एक तिब्बती शब्द है, जिसका अर्थ पारगमन अथवा एक चक्र से दूसरे चक्र की ओर अग्रसर होने की अवधि। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो किसी व्यक्ति के जीवन अवधि की समाप्ति के पश्चात दूसरी अवधि के आरंभ यानी मृत्यु के बाद का जीवन। 'बार्दो' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है-'बार' और 'दो'। 'बार' का अर्थ है, के बीच और 'दो' का अर्थ है, छोड़ा गया। नींद और जागृत अवस्था भी एक प्रकार का बार्दो है। उसी तरह मृत्यु और पुनर्जन्म का अंतराल भी बार्दो है। यह संसार क्षण-क्षण में परिवर्तित होता है। यहाँ सभी वस्तु अस्थायी हैं। अर्थात् कोई भी सदा के लिए एक ही रूप अथवा अवस्था में स्थायी नहीं है। बार्दो के अनुसार किसी भी वस्तु का न जन्म होता है और न नष्ट होता है, बल्कि एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तन होता रहता है। अतः बार्दो दो अवधि के अंतराल को कहा जाता है। सामान्य शब्दों में बार्दो एक अवधि की समाप्ति के पश्चात दूसरी अवधि का आरंभ होना है। सामान्यतः खाम्पा और मेम्बा यह मानते हैं कि मनुष्य जीवन के कई चरण होते हैं- चाम बार्दो (जन्म से

मृत्यु तक), मेलम बार्दो (स्वप्न लोक), साम्तेन बार्दो (ध्यानालोक) तथा चिने बार्दो (मृत्यु के बाद की यात्रा)। अर्थात् जब किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तब वह मृत्यु के पश्चात 49 दिनों तक बार्दो में रहता है। बार्दो यानी जीवन और मृत्यु के अंतराल में रहना है। इस दौरान आत्मा को सांसारिक रूप को छोड़कर दूसरे अवतार में परिवर्तित होने की प्रक्रिया से गुज़रना पड़ता है। उस स्थिति में मनुष्य खुद को मरा हुआ नहीं पाता, उसे लगता है कि वह अब भी जिंदा है और सांसारिक दुनिया में है। उनका हाव-भाव सब कुछ वैसे होते है जैसे सांसारिक लोक में हुआ करता था। बार्दो के दौरान उसका परिचय विभिन्न प्रकार के पशु पक्षियों से होता है, जिसकी हत्या उन्होंने जीवित रहते समय की थी। बार्दो के अंतिम दिन में उसे 'देनाग्पो' और उनके अंगरक्षकों के द्वारा देवता के दरबार में पेश किया जाता है। यह ज्ञात होने के लिए कि यह व्यक्ति पापी है या पुण्यधर्मी, उसने अपने जीवन में क्या-क्या शुभ कर्म किया है और तो और उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होगी या नर्क की प्राप्ति होगी। ऐसी मान्यता है कि जो व्यक्ति पुण्य कार्य करता है, उसको नये जीवन और काया की प्राप्ति निश्चित ही होगी। पापी मनुष्य की आत्मा को नये रूप की प्राप्ति नहीं होगी, मतलब उसकी आत्मा सदा के लिए नष्ट हो जाएगी। पुण्यात्मा को बार्दो से मुक्ति मिलेगी और उनका पुनर्जन्म अवश्य होगा। यानी सबको अपने कर्म का फल भुगतना होगा या जैसा कर्म वैसा परिणाम का भागी बनना पड़ेगा। अगर किसी व्यक्ति ने अच्छे कर्म किये हैं तो उसे स्वर्ग प्राप्त होगा और अगर उसने कुकृत्य अधिक किया हो तो नर्क ही मिलेगा। नाटक के प्रमुख पात्र दिक्चुंग और गोम्चेन के द्वारा सत्कर्म और कुकृत्य के परिणामों को दर्शाया जाता है। अतः इस लोक नाटक का दार्शनिक पक्ष यह दर्शाता है कि मनुष्य के लिए कर्म ही धर्म होता है। अर्थात् जैसे कर्म वैसे फल मिलना निश्चित है। मनुष्य अपने किए हुए कर्मफल को ही भुगतता है। क्योंकि सत्कर्म का फल सदा के लिए अच्छा होता है और कुकृत्य करने वाले को बुरे फल की प्राप्ति होती है।

बार्दो लोकनाटक में मोक्ष और पुनर्जन्म की आस्था को मंचीय कौशल और भंगिमा के साथ अभिनीत किया जाता है। यह समझना महत्त्वपूर्ण है कि बौद्ध धर्म के अनुसार मनुष्य का जीवन सभी प्राणियों में से सर्वश्रेष्ठ और बहुमूल्य होता है। उनकी दृष्टि में चौरासी लाख योनियों में सबसे श्रेष्ठ योनि मनुष्य योनि मानी जाती है। इसी योनि में जीव मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं और किसी दूसरी योनि में मुक्ति संभव नहीं है। इसलिए इस जीवन को व्यर्थ में नष्ट नहीं करना चाहिए। बौद्ध दर्शन इसीलिए एक आदर्श जीवन जीने का उपदेश देता है। परस्पर प्रेम, सद्भावना और अहिंसा इत्यादि जीवन का उद्देश्य होना चाहिए। बार्दो नाटक में अभिव्यक्त दर्शन के अनुसार इस सांसारिक जीवन की यात्रा मृत्यु के पश्चात भी रूकती नहीं है, अपितु मृत्यु के बाद की यात्रा महत्त्वपूर्ण होती है। कहा जाता है कि मनुष्य को बार्दो से पार ले जाने का मार्ग कर्म मात्र ही हो सकता है। बार्दो में मनुष्य के कर्म को आंका जाता है और उस आधार पर पुनर्जन्म की व्याख्या होती है। यदि मनुष्य की बार्दो से मुक्ति नहीं होगी तो उसका नष्ट हो जाना तय है।

इस तरह पाप और पुण्य बार्दो लोक नाटक की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। पाप और पुण्य की विचारधारा पूर्व-परंपरा से चली आ रही है। यह तो युगादि सत्य है कि जीवन बहुत बहुमूल्य है और इस जीवन को अनुशासित और आदर्शपूर्ण तरीके से जीने पर बल सदैव दिया गया है। बार्दो लोक नाटक में भी यही विचार प्रमुखता से दर्शाए जाते हैं। इस नाटक में दिक्चुंग और गोम्चन द्वारा पाप और पुण्य विचार को बहुत ही सुंदर से बताया जाता है। कैसे पापी मनुष्य का जीवन नष्ट होता है और एक पुण्य मनुष्य को पुनर्जन्म मिल जाता है। बार्दो लोक नाटक

में अहिंसावादी दर्शन प्रमुख है। अहिंसा बौद्ध धर्म के मुख्य सिद्धांतों में से एक है। बौद्ध धर्म में हिंसा का विरोध है, संसार के जीव जंतु और कीड़े-मकौड़े तक के प्रति हिंसा प्रकट नहीं करने का आदर्श रखा गया है। यह अहिंसावादी दर्शन बार्दो लोकनाटक में भी झलकती है। मुखौटा इस नाटक का प्रमुख तत्त्व है जिसे प्रतीकात्मक रूप में प्रयोग किया जाता है। बार्दो लोक नाटक में पशु-पक्षियों का भिन्न-भिन्न मुखौटा प्रयोग किया जाता है। इसका कारण यह है कि मनुष्य सांसारिक लोक में जीवित रहते समय पशु-पक्षियों या अन्य जीव-जंतुओं की हत्या करते हैं, तो मृत्यु के बाद के उनचास दिन बार्दो में रहते हुए उन सभी मृत आत्माओं से मिलते हैं। इसलिए यह नाटक एक नैतिक संदेश भी देता है तथा पक्षी या जानवरों के साथ हिंसा न करने के लिए प्रेरित करता है। नाटक मंचन के दौरान नाटक के मुख्य पात्र देनाक्फो (खलनायक) घुंघरू लिये मैदान में नृत्य करते हैं। इस नाटक में घुंघरू का प्रयोग इसलिए किया जाता है, जमीन के नीचे जीवन यापन करने वाले कीड़े-मकोड़े वहां से हट जाएं ताकि उनका जीवन नष्ट होने से बच जाये। अतः बार्दो लोक नाटक में अहिंसावादी दर्शन का सुंदर चित्रण देखने को मिलता है। यह नाटक दिखाता है कि हिंसा एक प्रकार से मोक्ष प्राप्ति के लिए बाधक तत्त्व है। बार्दो मनुष्य जीवन के क्रियाकलापों की दार्शनिक व्याख्या भी प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण के लिए देखें, तो बार्दो के अनुसार नींद लेना भी मृत्यु के समान ही है। जहाँ सभी तत्त्व तथा विचार प्रक्रिया विलीन हो जाती है और एक महान दीप्ति का अनुभव सामने आता है। एक प्रकार से स्वप्न की अवस्था मृत्यु की अवस्था से बहुत मेल खाती है। जिस प्रकार मृत्यु के दौरान मनुष्य निस्पंद, निश्चेष्ट हो जाता है और उसका समस्त क्रियाकलाप, चेतना सुसुप्त अवस्था में गुम हो जाती है। इसी प्रकार की अवस्था नींद में भी होती है। अतः बार्दो के अनुसार निद्रावस्था भी एक प्रकार की मृत्यु है।

निष्कर्षतः बार्दो एक पारंपरिक धार्मिक नाटक है, जिसका मंचन खुले मंच में होता है। सरल तरीके और सहज भाव से प्रस्तुतीकरण के कारण यह नाटक बेहद लोकप्रिय है। इसकी प्रस्तुति में अधिक तामझाम नहीं होने के कारण दर्शकों से सीधा तादात्म्य बिठा पाना संभव होता है। विशेषताओं को देखें, तो बार्दो नाटक संगीत एवं नृत्य प्रधान नाटक है। इस नाटक का उद्देश्य मुख्य रूप से दर्शकों का मनोरंजन करना ही नहीं होता है, बल्कि इसके माध्यम से नैतिक संदेश देना भी मुख्य है। यह हास्य प्रधान नाटक न होकर गहरे दार्शनिकता से जुड़ा और उनको अभिव्यंजित करने वाला एक सांस्कृतिक कला-रूप है। बार्दो लोक नाटक का मुख्य कथ्य है- खाम्बा लोगों का अनोखा जीवन दर्शन, नैतिक मान्यताएँ, लोक-परलोक, कर्म-फल और पुनर्जन्म संबंधी आस्था आदि। यह नाटक मनुष्य को सत्कर्म करने की प्रेरणा देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. धर्मराज. (1994). *अरुणाचल की जानजातियां और ऐतिहासिक स्थान अनुसंधान.*अरुणाचल प्रदेश: अरुणाचल प्रदेश सरकार.
2. विलय, गौतम. (2000). *हिंदी नाटक रंग शिल्प दर्शन*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. नई दिल्ली.
3. त्रिपाठी, वशिष्ठ नारायण. (2000). *भारतीय लोकनाट्य*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन. नई दिल्ली.

*(**लेखकीय परिचय :** मिसुङ मदो *राजीव गाँधी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग* में शोधार्थी हैं।*

मोबा: 7629827618, *ई-मेल :* medosungme@gmail.com *)*